

ई-पत्रिका



खण्ड 1 अंक 4

जनवरी-मार्च, 2025

शीतोष्ण फलदार पौधों की बिक्री

डॉ. यशवंत सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी और विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्रों और अनुसंधान स्टेशनों में बागवानों के लिए फलदार पौधे की वार्षिक बिक्री 16 दिसंबर (सोमवार) से शुरू हो गई। फल रोपण सामग्री की वार्षिक बिक्री के लिए हिमाचल प्रदेश और आसपास के राज्यों के किसान-बागवान विश्वविद्यालय और क्षेत्रीय केन्द्रों पर आए।



इस बिक्री के दौरान किसानों द्वारा सेब, नाशपाती, खुमानी, आड़ू, चेरी, कीवीफ्रूट, अखरोट, अनार, प्लम, जापानी फल आदि की विभिन्न किस्मों को खरीदा गया। नौणी विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर में तीन नर्सरियों— फल विज्ञान विभाग की नर्सरी, मॉडल फार्म, बीज विज्ञान, कंडाघाट, रोहडू में कृषि विज्ञान केंद्र, मशोबरा और शारबो (किन्नौर) में अनुसंधान केंद्रों से विभिन्न फलों की किस्मों के पौधे खरीदे।

इसके अतिरिक्त, कुल्लू जिले के बजौरा में विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय बागवानी अनुसंधान और प्रशिक्षण स्टेशन ने 9 दिसंबर से पौधों की बिक्री शुरू कर दी थी। इस वर्ष, किसानों ने फलों की फसलों के विविधीकरण के प्रति रुचि दिखाई है और यह बिक्री के दौरान भी दिखाई दी, जहां सेब की विभिन्न किस्मों के साथ-साथ जापानी फल, कीवी और अन्य गुठलीदार फलों की मांग में वृद्धि देखी गई। इस वर्ष, विश्वविद्यालय और क्षेत्रीय स्टेशनों पर बिक्री के लिए उपलब्ध पौधों की कुल संख्या लगभग 2 लाख के आसपास है।

विश्वविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्रों पर वार्षिक शीतोष्ण फलदार पौधों की बिक्री में बिके 1 लाख से ज्यादा पौधे

विस्तार शिक्षा निदेशालय

डॉ. यशवंत सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी-सोलन (हिमाचल प्रदेश)

राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के अन्तर्गत नौणी विश्वविद्यालय होगा एक प्राकृतिक कृषि केंद्र

डॉ. यशवंत सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी को हाल ही में लॉन्च किए गए राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के छः केंद्रों में से एक प्राकृतिक कृषि केंद्र के रूप में चुना गया है। भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अन्तर्गत रु. 2481 करोड़ रुपये परिव्यय के इस मिशन को हाल ही में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने मंजूरी दी थी। इसका उद्देश्य मिशन—मोड दृष्टिकोण के माध्यम से देश भर में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना है।

डॉ. यशवंत सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय सहित गुरुकुल, कुरुक्षेत्र; गुजरात प्राकृतिक खेती विज्ञान विश्वविद्यालय; तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय; रायथुसाधिकारा संस्था, आंध्र प्रदेश और बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, रांची इस मिशन में प्रमुख प्राकृतिक कृषि केंद्र के रूप में चुने गए हैं। इस मिशन के अन्तर्गत एक केंद्र के रूप में चुना जाना प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने में नौणी विश्वविद्यालय के अग्रणी प्रयासों को रेखांकित करती है। विश्वविद्यालय के लिए यह एक उल्लेखनीय उपलब्धि है।

स्कूली छात्रों के व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए विश्वविद्यालय ने किया एमओयू

समग्र शिक्षा, हिमाचल प्रदेश और डॉ. यशवंत सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी ने एक परिवर्तनकारी साझेदारी में प्रवेश किया है, जिसका उद्देश्य कृषि व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले स्कूली छात्रों के बीच व्यावहारिक कृषि प्रशिक्षण प्रदान करना और उद्यमशीलता कौशल को बढ़ावा देना होगा। इस पहल से हिमाचल प्रदेश के 227 सरकारी स्कूलों में 9वीं से 12वीं कक्षाओं के 11,900 छात्रों को लाभ होगा।

इस साझेदारी के अन्तर्गत, कृषि और संबंधित क्षेत्रों में व्यावसायिक शिक्षा के लिए एक इनक्यूबेशन सेंटर स्थापित किया जाएगा, जो छात्रों को प्रैक्टिकल सीखने के अमूल्य अवसर प्रदान करेगा। इस परियोजना को ₹2.8 करोड़ के बजट आवंटन के साथ समग्र शिक्षा द्वारा वित्त

पोषित किया जाएगा। परियोजना के सफल कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए विश्वविद्यालय कृषि, बुनियादी ढांचे और डेटा प्रबंधन में अपनी विशेषज्ञता का योगदान देगा।

इनक्यूबेशन सेंटर का प्राथमिक लक्ष्य छात्रों को कृषि और संबंधित क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण प्रदान करना है। नवाचार, कौशल विकास और अनुभवात्मक शिक्षा के लिए अनुकूल वातावरण बनाकर, यह परियोजना राज्य में व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ाएगी।

बगबानी सम्बन्धित जनवरी से मार्च माह की कार्यसारणी

सभी शीतोष्ण फलों में काट-छांट व सिधाई के कार्य के लिए यह उचित समय है। पौधों का सुषुप्तावस्था में जाने के बाद काट-छांट व सिधाई का कार्य आरम्भ करें। काट-छांट के बड़े घावों पर चौबाटिया पेस्ट का लेप लगाएँ तथा काट-छांट के बाद बोर्डो मिश्रण या कॉपर फफूँदनाशक दवाई का छिड़काव करें। बागीचे से काट-छांट की गई शाखाएँ इकट्ठी करें तथा झाड़ियाँ आदि को निकाल कर बागीचों को साफ रखें। फल पौधों की नर्सरी उत्पादन के लिए सेब, आड़ू, चूली, कैथ, किवी अखरोट, व पीकान के बीजों को स्ट्रैटीफिकेशन के लिए डालें। सभी शीतोष्ण फलदार पौधों में गली-सड़ी गोबर की खाद व उर्वरक का उपयोग पौधों की आयु अनुसार करें।

सदाबहार फलों में किन्नु, संतरा, माल्टा, चकोतरा आदि फलों का तुड़ान करें तथा नर्सरी पौधों को पाले से बचाने के लिए घास, पत्तों आदि की छान बनाकर ढक लें। पाला पड़ने की सम्भावना में सिंचाई करें। सूखा पड़ने की अवस्था में भी सिंचाई करना जरूरी है तथा रोग व कीटग्रस्त शाखाओं को काट-छांट कर के निकाल दें। पौधों के तौलियों में नमी को संरक्षित करने के लिए घास की मोटी तह के रूप में मल्व बिछाएं।

शीतोष्ण फल पौधों को लगाने का आजकल उपयुक्त समय है। लम्बे सूखे की परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए वर्षा होने के पश्चात् ही पौधारोपण का कार्य करें। यह फल पौधे मार्च के महीने तक रोपित किये जा सकते हैं लेकिन जनवरी के महीने में इन फल पौधों का रोपण उपयुक्त रहेगा। टेढ़े-मेढ़े

पहाड़ी और अधिक ढलान वाले क्षेत्रों में आमतौर पर फल पौधों को कन्दूर विधि द्वारा लगायें। जिन बागावानी के पास छोटे-छोटे खेत बने हो या बनाये जा सके इन खेतों के मध्य में उचित दूरी पर फल पौधों को लगाएं। खेतों की ढलान अन्दर की ओर रखें जिससे वर्षा के पानी का सही उपयोग हो सके और भूमि कटाव भी कम हो। सघन बागवानी के लिए फल पौधे वहीं लगायें जहां भूमि अधिक उपजाऊ, समतल तथा अधिक उत्पादन क्षमता वाली हो, सिंचाई सुविधा उपलब्ध हो और तेज हवा भी न चलती हो। पौधों को एक दूसरे से अनुमोदित दूरी पर लगाना जरूरी है। यह दूरी फल की किस्म, मूलवृंत की किस्म, मिट्टी, जलवायु तथा काट-छांट की विधियों पर निर्भर करेगा। स्वनिष्फलता वाली किस्मों के साथ 25 से 33 प्रतिशत परागण किस्मों को अवश्य लगाएं।

फल पौधों को लगाते समय जड़ों को उनकी सही दिशा में फैला देना चाहिए। पौधों को पौधशाला की भांति ही स्वाभाविक गहराई तक दबा कर रोपित करें। मौसम की परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए फल पौधों को लगाने के पश्चात् इनकी सिंचाई अवश्य करें और इसमें मल्व का उपयोग करें, जिससे कि नमी को ज्यादा समय तक संजोकर रखा जा सके। कॉलर रॉट बीमारी से बचाव के लिए पौधे में कलम के जोड़ को भूमि के धरातल से लगभग 20-25 सें.मी. ऊँचा रखें। इसी प्रकार नाशीकीटों जैसे सैंजोस्केल तथा वूली एफिड से बचाव के लिए पौधों को तेल (हॉर्टीकल्चर मिनरल ऑयल) के घोल या कीटनाशी घोल में डुबोएं या इनका छिड़काव करें।

गुठलीदार फलों, अखरोट, पीकाननट, किवी, नाशपाती, जापानीफल (परसीमन) तथा सेब में कलम करने का काम कार्य पूरा कर लें तथा गुठलीदार पौधों सेब, चैरी व नाशपाती में टॉप वर्किंग का कार्य भी समाप्त कर लें। अंकुरित बीजों की नर्सरी में बुआई कर लें। शुष्क शीतोष्ण क्षेत्रों में बर्फ पिघलते ही पौधरोपण का कार्य तथा इन क्षेत्रों में काट-छांट का कार्य भी समाप्त कर लें।

सब्जी की फसलों की कार्य रूपरेखा

जनवरी में प्याज की तैयार पनीरी को 15×10 सें.मी. की दूरी पर खेतों में लगायें। बीज वाली फूलगोभी में नत्रजन उर्वरक की तीसरी मात्रा



डालें और बोरिक एसिड 0.1 प्रतिशत (100 ग्राम/100 लीटर पानी) का छिड़काव करें। तना सड़न रोग की रोकथाम के लिए मैन्कोजेब 250 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी का छिड़काव करें। फरवरी में टमाटर, शिमलामिर्च, कड़वी मिर्च की पनीरी को मिट्टी को उपचारित करके डालें। मटर में नत्रजन खाद की दूसरी मात्रा डालें (4 कि.ग्रा. कैन/बीघा)। चूर्ण फफूँदी रोग की रोकथाम के लिए कैराथेन (50 मि. ली./100 लीटर पानी) या सल्फेक्स (200 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी) के घोल का छिड़काव करें। प्याज में नत्रजन उर्वरक की दूसरी मात्रा डालें (10 कि.ग्रा. कैन/बीघा)। मार्च में टमाटर, शिमला मिर्च और कड़वी मिर्च की तैयार पनीरी की खेतों में रोपाई करें। टमाटर की अनियमित ऊँचाई वाली किस्मों की 90×30 सें.मी. तथा नियमित ऊँचाई वाली किस्मों की 60×45 सें.मी. की दूरी पर रोपाई करें। फ्रांसबीन की बौनी किस्मों की 45×15 सें.मी. की दूरी पर बुआई करें। मटर की बौनी किस्में अरकल या वी एल-7 की बीजाई करें। ऊँचे क्षेत्र में बर्फ पिघलने पर मटर की खड़ी फसल में नत्रजन खाद की दूसरी मात्रा डालें (4 कि.ग्रा. कैन/बीघा)। फूलगोभी, बन्दगोभी, गांठगोभी, सलाद, सरसों, टमाटर, शिमला मिर्च की पनीरी तैयार करें। मूली, शलगम और गाजर की 30×10 सें.मी. की दूरी पर बीजाई करें। पालक (30×7.5 सें.मी.) तथा मेथी (15×7.5 सें.मी.) की बीजाई करें। अरकल मटर की बीजाई करें।

फूलों में होने वाले कार्य

जनवरी

- कारनेशन का मध्य पहाड़ी क्षेत्रों में प्रवर्धन व पौधरोपण।

- गुलदाऊदी में हैडिंग बैक करना।
- गुलाब का प्रवर्धन।

फरवरी

- कारनेशन का मध्य पहाड़ी क्षेत्रों में प्रवर्धन व पौधरोपण।



- जरबेरा का हरितगृहों में पौधरोपण।
- ग्लेडियोलस के घनकन्दों की बुआई—मध्य पहाड़ी क्षेत्रों में।
- गर्मियों वाले मौसमी फूलों की पौध तैयार करना।
- गुलाब का प्रवर्धन।

मार्च

- कारनेशन का प्रवर्धन व पौधरोपण—ऊँचे व मध्य पहाड़ी क्षेत्रों में।
- गुलदाऊदी व गेंदे का प्रवर्धन।
- ग्लेडियोलस के कन्दों की बुआई—मध्य पहाड़ी क्षेत्रों में।
- लिलियम, डैफोडिल और ट्यूलिप के फूलों का तुड़ान।
- गर्मियों वाले मौसमी फूलों की पौध तैयार करना तथा पौधरोपण करना।

फल—सब्जी परिरक्षण हेतु कार्य

जनवरी

- नींबू व पहाड़ी गलगल से अचार एवम स्कवेश, संतरा व माल्टा के छिलकों से कैण्डी, विभिन्न सब्जियों जैसे गाजर, शलगम, गोभी, मूली इत्यादि के अचार,

टमाटर से सॉस कैचअप, चटनी व प्यूरी इत्यादि और आंवला से मुरब्बा, कैण्डी व अचार बनाएं।

फरवरी

- विभिन्न सब्जियों के अचार, आलू के चिप्स, गाजर एवं आंवले का मुरब्बा तथा कैण्डी बनाएं।
- टमाटर के विभिन्न पदार्थ तथा सब्जियों को सुखाकर सुरक्षित रखें।
- कचनार की चटनी बनाएं।

मार्च

- पहले से परिरक्षित किए हुए नींबू प्रजातीय फलों के रस से स्कवेश, पपीते से चटनी, मुरब्बा इत्यादि पदार्थ और लहसुन व बंदगोभी का अचार बनाएं।



- कददू से कैण्डी, टूटी फ्रूटी व इसके करनल को सुखाकर तुरन्त तैयार होने वाले विभिन्न पदार्थ बनाएं जैसे इन्सटैंट हलवा मिक्स इत्यादि बनाएं। इसके अतिरिक्त पाऊंडर में दलिया और दूसरे अनाज मिलाकर तुरन्त तैयार करने वाले पदार्थ जैसे इन्सटैंट दलिया मिक्स, पोरिएज़ मिक्स इत्यादि बनाएं।
- ऐलोवेरा से अच्छी गुणवत्ता वाले पेय पदार्थ बनाएं।

बीज उत्पादन सम्बन्धित कार्य

जनवरी

निचले पहाड़ी क्षेत्रों में प्याज के बीज

उत्पादन के लिए खेतों में तैयार पनीरी 15×10 सें. मी. दूरी पर लगायें। हिमाचल प्रदेश के मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्रों में फूलगोभी में बीज उत्पादन के लिए नाइट्रोजन उर्वरक की तीसरी खुराक डालें और बोरिक एसिड 0.1 प्रतिशत (100 ग्राम/100 लीटर पानी) का छिड़काव करें। तना सड़न रोग के प्रबंधन एवं निदान के लिए डाइथेन एम-45 (250 ग्राम/100 लीटर पानी) के घोल का छिड़काव करना चाहिए। सघन खेती के अन्तर्गत बौने गेंदे की पौध को 30×10 सें. मी. और सामान्य स्थिति में 60×40 सें. मी. की दूरी पर लगायें। गुणवत्तापूर्ण नर्सरी उत्पादन के लिए बीजों को ट्राइकोडर्मा हर्जियानम 1×10⁵ सी.एफ.यू./एम.एल. के घोल में 12 घंटों तक उपचारित करें तथा 0.1 प्रतिशत यूरिया का छिड़काव करें। अत्यधिक सिंचाई से बचें।

फरवरी

निचले पहाड़ी क्षेत्रों में टमाटर, शिमला मिर्च और कड़वी मिर्च की नर्सरी में बीजोपचार और मिट्टी उपचार के बाद ही नर्सरी उगानी चाहिए। निचले पहाड़ी क्षेत्रों में बीज उत्पादन के लिए भिंडी (पंजाब 8 किस्म) की बुआई 30-45×15 सें. मी. की दूरी पर करें।

मार्च

हिमाचल प्रदेश के निचले पहाड़ी क्षेत्रों में टमाटर, शिमला मिर्च और कड़वी मिर्च के बीज उत्पादन के लिए तैयार पौध की रोपाई खेतों में करें। हिमाचल प्रदेश की मध्यवर्ती पहाड़ियों में टमाटर के बीज उत्पादन के लिए अनियमित ऊँचाई वाली किस्मों की 90×30 सें. मी. और नियमित ऊँचाई वाली किस्मों की 60×45 सें. मी. की दूरी पर बुआई करें। मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्रों में फूलगोभी की बीज वाली फसल में तना एवं फूल सड़न रोग को रोकने के लिए मैनकोजेब (250 ग्राम/100 लीटर पानी) का छिड़काव करें।

फल-सब्जी फसलों के कीट प्रबन्धन सम्बन्धित कार्य

सेब में लगने वाले माइट एवं सेन जोस स्केल के प्रबंधन हेतु एच एम ओ 4 मिलीलीटर प्रति 200 लीटर पानी का घोल बनाकर टाइट

क्लस्टर अवस्था से पहले छिड़काव करें। थ्रिप्स के प्रबंधन हेतु थायाक्लोप्रिड 240 एस सी 100 मिलीलीटर प्रति 200 लीटर पानी के घोल का गुलाबी कली अवस्था में छिड़काव करें। पीच लीफ कर्ल एफिड हेतु गुलाबी कली अवस्था में ऑक्सीडेमेटोन मिथाइल 25 ई सी 200 मिलीलीटर प्रति 200 लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें। आम में मैंगो सिल्ला के प्रबंधन हेतु गांठ वाली टहनियों को काट दें। मिली बग के प्रबंधन हेतु तनों पर अल्काथीन का स्लिपरी बैंड लगाएं। फूल खिलने से पहले और फल लगने पर इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस एल 80 मिलीलीटर प्रति 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। गोभी में सुंडियों के प्रबंधन हेतु सुंडियों और उनके पीले अंडों को हाथ से नष्ट कर दें। मेलाथियोन 50 ई सी 100 मिलीलीटर व क्लोरपाइरीफोस 20 ई सी 200 मिलीलीटर प्रति 100 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। जड़ गांठ सूत्रकृमि के प्रबंधन हेतु बीज गटिठयों और पौधों का चुनाव सूत्रकृमि रहित क्षेत्र से करें। सूत्रकृमि ग्रसित मिट्टी में खेत तैयार करते समय कार्बोफ्यूरोन 3G, 2.5 किलोग्राम प्रति बीघा मिलाएं। ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों में मौन प्रबंधन हेतु बाहरी पैकिंग को फरवरी के आखिर में हटा दें। मौसम को देखकर भीतरी पैकिंग को इसके तीन सप्ताह बाद हटाएं। मध्य पर्वतीय क्षेत्रों में भीतरी पैकिंग को फरवरी के दूसरे पखवाड़े में हटाएं। निचले पर्वतीय क्षेत्रों में हल्की भीतरी पैकिंग दी गई हो तो सरसों खिलने के समय पर हटा दें। मौनवंश की जांच और सफाई करें। मार्च के पहले पखवाड़े में 1 से 2 लीटर चीनी का घोल (चीनी और पानी का आधा-आधा भाग मिलाकर) मौन वंश में रखें। मार्च में अधिक शक्तिशाली मौन वंशों से बंद शिशु कोशिकाओं वाली कुछ फ्रेम कमजोर मौन वंशों में डाल दें। रानी मक्खी को मार्च के बाद अंडे देने के लिए पिछले वर्ष निकाली गई चौखटें या फाउंडेशन सीट्स आधार पट्टी के सहित फ्रेम में डालें। जिन क्षेत्रों में सेब एवं गुठलीदार फलों में फूल मार्च में आ जाता हो तो परागण क्रिया हेतु मौन वंशों को बगीचे में स्थापित करें।

पादप रोग सम्बन्धित कार्य

- फलों जैसे सेब, नाशपाती, गुठलीदार इत्यादि की गिरी हुई पत्तियाँ इकट्ठा कर गड्ढे में डाल दें।

- प्रूनिंग के दौरान, चाकू को स्प्रीट से धोना न भूलें।
- प्रूनिंग के उपरांत कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (0.3%) का स्प्रे करें—बोर्डो पेंट/पेस्ट बड़े कट वाली टहनियों पर लगाएं।
- सेब की हरी कली अवस्था पर स्कैब एवं चूर्णी फफूँद से बचाव के लिए Fluxapyroxad 75 g/l + Difenoconazole 50 g/l SC 60 मिलिलीटर 200 लीटर के हिसाब से छिड़काव करें।
- गुलाबी कली अवस्था पर Hexaconazole 4% + Zineb 68% WP का 500 ग्राम/200 लीटर के हिसाब से छिड़काव करें।
- टमाटर एवं शिमला मिर्च की नर्सरी लगाने से पूर्व मिट्टी को जाँच लें एवं फोर्मलिन से मिट्टी का उपचार करें।
- सड़ी हुई गोबर की खाद का इस्तेमाल करें।

औषधीय व सुगंधित पौधों से सम्बन्धित कार्य

जनवरी—फरवरी

- औषधीय एवं सुगंधित पौधों की नर्सरी बिजाई हेतु खेतों को दो से तीन बार जुताई करके मिट्टी को भुरभुरा बना लेना चाहिए।
- कंकड़—पत्थर व खरपतवार आदि निकाल कर उचित मात्रा में गोबर खाद डालकर खेतों को समतल बनाया जाता है। समतल खेतों में पानी निकासी का उचित प्रबन्ध होना चाहिए।
- इस समय शरदकाल में बिजाई की गई रवि की औषधीय फसलों का खेतों में प्रत्यारोपण किया जाता है। समय—समय पर उनकी हल्की सिंचाई कर निराई—गुड़ाई भी की जानी चाहिए। उदाहरण के तौर पर बबूना, चंद्रशूर अलसी, कलेरी सेज, हनी प्लांट, तिल पुष्पी, हरितपत्री आदि रबी मौसम के महत्वपूर्ण व्यावसायिक, औषधीय एवं सुगंधित पौधे हैं।

फरवरी—मार्च

- बीजों से पौधा तैयार करने हेतु नर्सरी की बिजाई के लिए इन महीनों को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।
- ग्रीष्म ऋतु की शुरुआत में तापमान बढ़ने के साथ साथ नर्सरी पौधों का विकास अच्छी तरह से होता है।
- इन महीनों में अधिकतम औषधीय पौधों/फसलों की बीजों द्वारा बिजाई की जाती है। उदाहरणतया तुलसी, अश्वगंधा, कालमेघ, अकरकरा, स्टीविया, कस्तूरी, भिंडी आदि।
- रोजमैरी, लैवेंडर, सेज, रोज, सेन्टिड, जिरेनियम, गुलाब आदि प्रमुख सुगंधित पौधों एवं मुलेठी के पौधे तने की कटिंग द्वारा इसी माह में तैयार किए जाते हैं।

कृषिवानिकी पौधों में होने वाले कार्य

जनवरी

- पॉपलर नर्सरी का उखाड़ना, नर्सरी वाली भूमि में दूसरी जुताई व खेत तैयार करना।
- हरड़, बहेड़ा व रीठा के फल तोड़ने का कार्य करना।
- पिछले वर्ष में रोपित पौधों का कम से कम एक बार सिंचित करना। चन्दन के पौधों को हर 15 दिन के बाद 8 से 10 लीटर प्रति पौध पानी से सिंचित करना।
- ब्यूँस एवं पॉपलर की 2 या 3 वर्ष के पेड़ों की निचली शाखाओं को हटा लें।
- ब्यूँस एवं पॉपलर के पौधों का पौधरोपण 4x3 मीटर, 4x4 मीटर, 4x5 मीटर की दूरी पर करें।
- हरड़, बहेड़ा, आंवला दरेक के बीज नर्सरी हेतु इक्ठा करें।
- पौधशाला में कलमें लगाने के लिए शहतूत, ब्यूँस व पॉपलर की कलमें तैयार करके लगाएं।

फरवरी

- पॉपलर की नर्सरी का रोपण तथा सिंचाई।
- सीबेकथॉर्न (छरमा) की कलमें 20 से 25 सेंटीमीटर लंबी, पेंसिल की मोटाई या

1.5–2.0 सेंटीमीटर मोटाई की 3–4 आँखों वाली कलमों को मिट्टी में या पॉलिथीन बैग में 1x1x1 मिट्टी, रेत व गोबर के मिश्रण में लगाएं।

मार्च

- हरड़, बहेड़ा, आंवला, रीठा, तुनी व चन्दन के बीजों की रूपाई।
- लसूड़ा, हरड़, बहेड़ा, ढेयूं, नीम व रीठा की कलम करना।
- बरसात में रोपण करने वाले पौधे जैसे कचनार, ब्यूल, तूनी, दरेक, हरड़, बहेड़ा, आंवला, दाडू इत्यादि के बीज पॉलीथीन के लिफाफों में बोने चाहिए।

मौसम आधारित कृषि सलाह

- राज्य के किसान राज्य में लगातार अनुभव की जा रही मौसम की ऐसी अनिश्चिताओं के प्रति लचीलापन बढ़ाने के लिए बागवानी फसल आधारित कृषिवानिकी मॉडल अपना सकते हैं। ऐसे कृषिवानिकी फल आधारित फसल मॉडल जल तनाव प्रतिरोधी होने के कारण पशुधन के लिए चारे की आपूर्ति बढ़ाने में भी मदद करते हैं।
- ऐसी परिस्थितियों में किसानों को सूखा-सहिष्णु और देर से बोई जाने वाली गेहूँ की किस्मों जैसे एचपीडब्ल्यू-155 और एचपीडब्ल्यू-368 की खेती करनी चाहिए। जिन किसानों ने पहले ही गेहूँ की फसल बो दी है, उन्हें सलाह दी जाती है कि वे फसल की जड़ की शुरुआत के चरण में जीवन रक्षक सिंचाई करें।
- किसानों को उन सब्जियों की फसलें बोने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है जिनमें पानी की अपेक्षाकृत कम आवश्यकता होती है। कम फसल

बायोमास के कारण कम वाष्पोत्सर्जन दर वाली मूली, शलजम, पालक और चुकंदर जैसी फसलों को फलों के बगीचों या कृषि वानिकी आधारित मॉडल में अंतरफसल के रूप में चुना जा सकता है।

- किसानों को जल संरक्षण और जल तनाव के प्रबंधन के लिए खेत स्तर पर फसल विविधीकरण और विविध कृषि पद्धतियों को अपनाने की सलाह दी जाती है।
- यदि साफ और शुष्क स्थिति जारी रहती है तो पाला पड़ने की बहुत अधिक संभावना होगी। फसलों पर पाले के प्रभाव को कम करने के लिए देर शाम के समय पानी की हल्की सिंचाई करें।
- फलदार पौधों के छोटे पौधों को दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व दिशा की ओर खुला रखकर बोरियों से ढककर सुरक्षित रखें।
- बागवान उचित छंटाई प्रथाओं का पालन करें और काटी गई लकड़ी को न जलाएं, इसे छोटे टुकड़ों में काटकर मल्लिंग और खाद बनाने के लिए उपयोग करें।
- किसानों को मौसम आधारित कृषि-सलाह सेवाओं के लिए मेघदूत ऐप डाउनलोड करना चाहिए और उसका पालन करना चाहिए।



कृषि सलाह सेवा पोर्टल

प्रकाशक: विस्तार शिक्षा निदेशालय, डॉ. यशवन्त सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी - सोलन, हि. प्र. दूरभाष / 01792 252706, 252426, ई मेल: dext@yapuniversity.ac.in
www.yapuniversity.ac.in



सोशल मीडिया में विश्वविद्यालय को करें फोलो